

डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, आमोस: सिंह दहाड़ चुका है, कौन नहीं डरेगा? सत्र 5: आमोस 5:18-27, आज्ञाकारिता, बलिदान नहीं, आमोस 6:1-7, पार्टी का समय समाप्त, आमोस 6: 8-14, मृत्यु की दुर्गंध लोगों पर छा गई

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म आमोस की पुस्तक पर अपने शिक्षण में हैं। आमोस: सिंह दहाड़ा है, कौन नहीं डरेगा? यह सत्र संख्या 5 है, आमोस 5:18-27, आज्ञाकारिता बलिदान नहीं, आमोस 6:1-7, पार्टी समाप्त हुई, और आमोस 6:8-14, मृत्यु की दुर्गंध लोगों पर छा गई।

खैर, इस अगले सत्र में, हम वहीं से शुरू करेंगे जहाँ हमने आमोस अध्याय 5 में छोड़ा था। आपको याद होगा कि हमने अध्याय 5 के पहले 17 पदों को कवर किया था और आज हम इसे पद 18 से शुरू करेंगे, लेकिन हमें पीछे मुड़कर अध्याय 5 में जो कुछ था उसकी थोड़ी समीक्षा करने की आवश्यकता है। याद कीजिए, इसकी शुरुआत शोक और विलाप की ध्वनियों से हुई थी, एक प्रकार की मृत्यु की आभा के साथ, और इसी तरह यह अंश समाप्त भी हुआ।

और इस दौरान, प्रभु लोगों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे उन्हें खोजें और जीवन जिएँ। वे इसका अर्थ स्पष्ट नहीं करते, बल्कि यह स्पष्ट करते हैं कि मैं बेतेल, गिलगाल, बेशेबा या ऐसी ही किसी जगह जाकर धार्मिक अनुष्ठानों के ज़रिए मुझे खोजने की बात नहीं कर रहा, बल्कि जैसे-जैसे यह अंश आगे बढ़ता है, वे कहते हैं कि जो अच्छा है उसे खोजो और जीवन जियो। और इस प्रकार वे उनकी जीवनशैली, न्याय की बात कर रहे हैं।

वह आज्ञाकारिता चाहता है, बलिदान नहीं। वह वैध आज्ञाकारिता चाहता है, पंथीय कर्मकांड नहीं। और इसलिए वाचा समुदाय पर मृत्यु का खतरा मंडरा रहा है।

प्रभु उन पर सैन्य आक्रमण की धमकी दे रहे हैं। उन्हें पश्चाताप करना होगा और उनकी ओर लौटना होगा, और इसमें आज्ञाकारिता शामिल होगी। और मैंने इस अगले भाग का शीर्षक वास्तव में पद 18 से 27 रखा है।

जैसा कि हम देखेंगे, यह एक विशिष्ट साहित्यिक इकाई है, लेकिन यह पहले जो लिखा गया है उससे भी निकटता से संबंधित है, और मुझे लगता है कि इसीलिए उन्होंने अध्यायों का विभाजन करते समय इन अंशों को एक साथ रखा होगा। इसलिए अध्याय 5 के पद 18 से 27 को आज्ञाकारिता कहा गया है, बलिदान नहीं। इसलिए, जैसा कि हमने कल किया था, हम पाठ पढ़ेंगे और फिर आगे बढ़ते हुए उस पर टिप्पणी करेंगे।

और हम यहाँ ज़्यादा आगे नहीं जा पाएँगे, इससे पहले कि मुझे कुछ बातें कहनी पड़ें। पहला शब्द है, हाय। लेकिन मैं 18 से 20 तक की आयतें पढ़ूँगा।

हाय तुम पर, जो प्रभु के दिन का इंतज़ार करते हो। तुम प्रभु के दिन का इंतज़ार क्यों करते हो? वह दिन अंधकार का होगा, उजाले का नहीं। हमने इस बारे में पिछले सत्र में बात की थी।

प्रभु का दिन वह दिन है जब प्रभु एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में अपने शत्रुओं का न्याय करने और अपने लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए आते हैं। और उत्तरी राज्य, जो इस भविष्यवाणी का मुख्य पात्र है, प्रभु के दिन की प्रतीक्षा कर रहा था। और आमोस उस न्याय का वर्णन करके शुरू करता है जो आसपास के सभी राष्ट्रों पर आने वाला है।

लेकिन फिर वह सीधे उनके पास आता है और कहता है, "तुम ही मुख्य निशाना बनोगे। तुम प्रभु के दिन का इंतज़ार कर रहे हो क्योंकि तुम्हें लगता है कि वह प्रकाश, मुक्ति और उद्धार का दिन होगा जो तुम्हें बेहतर सुरक्षा और समृद्धि देगा। लेकिन असल में वह अंधकार का दिन होगा।"

यह ईश्वर के न्याय का दिन होगा। यह ऐसा होगा जैसे कोई आदमी शेर से भाग गया हो। तो, कल्पना कीजिए।

तुम सड़क पर हो। एक शेर शहर में घुस आया है, और तुम उससे दूर भागना चाहते हो, इसलिए तुम दौड़ते हो और तभी एक भालू से टकरा जाते हो। मुझे नहीं पता।

अगर मैं शेर या भालू बनना चाहता हूँ तो मुझे सिक्का उछालना होगा। मुझे लगता है कि वे दोनों बहुत ही खूँखार और जानलेवा हैं, मानो वह अपने घर में घुस गया हो। इसलिए वह शेर और भालू से बचने के लिए अपने घर में भागता है, और उसे राहत मिलती है, वह दीवार पर हाथ रखता है, तभी एक साँप उसे काट लेता है।

और यह हिब्रू शब्द है नकाश। जब भी आप पहचान सकते हैं, आप हमेशा यह नहीं बता सकते कि यह जहरीला है या नहीं, लेकिन यह एक जहरीला साँप है। इसलिए उसने सोचा कि वह सुरक्षित है, लेकिन नहीं।

तो अगर आप शेर से भागने की कोशिश करेंगे, तो आपका सामना एक भालू से होगा। भालू से भागने की कोशिश करेंगे, तो आपका सामना एक साँप से होगा। आप सोच रहे होंगे कि क्या उस ज़माने में उनके घरों में साँप हुआ करते थे?

हाँ, मेसोपोटामिया के कुछ शकुनों से हमें पता चलता है कि साँप घरों, छतों और ऐसी ही चीज़ों में घुस सकते हैं। तो यह बात सच है, और बात यह है कि न्याय से बचना असंभव होगा। वह इसे अध्याय 9 में आगे दोहराएगा। क्या प्रभु का दिन उजियाला नहीं, अंधकारमय नहीं होगा?

घोर अंधकार, बिना किसी प्रकाश की किरण के। तो वह उनकी उम्मीदों पर पानी फेर रहा है। वे उम्मीद कर रहे हैं कि प्रभु का दिन उजाले का दिन होगा।

नहीं, यह अंधकार का दिन होगा, और आप इससे बच नहीं पाएँगे। लेकिन आइए पहले शब्द, "विपत्ति" पर वापस आते हैं। यह इब्रानी शब्द "होय" है।

और कई बार भविष्यवक्ताओं ने, जब वे न्याय की घोषणा करते हैं, तो अपने न्याय-भाषणों की शुरुआत इसी शब्द से की है। और वास्तव में, बाइबल में पाए जाने वाले विभिन्न साहित्यिक रूपों का अध्ययन करने वाले आलोचक भी इसे दुःख की भविष्यवाणी कहेंगे।

लेकिन यह एक होई ओरेकल है। यह हिब्रू शब्द है। और अगर आप होई शब्द का अध्ययन करें तो यह वास्तव में आह, ओह, हे जैसा एक विस्मयादिबोधक है।

इस तरह के छोटे शब्दों को विस्मयादिबोधक कहते हैं। यह वास्तव में एक विस्मयादिबोधक है। यशायाह 55 में इसका प्रयोग सकारात्मक अर्थ में, रोने के इरादे से किया गया है, न कि न्याय की घोषणा के रूप में।

लेकिन भविष्यवक्ता इस शब्द का एक विशिष्ट प्रयोग करते हैं जो उस संस्कृति में प्रचलित था, और अपने न्याय-भाषणों में, इसका प्रयोग करते हैं। और हम राजाओं और अन्यत्र, यिर्मयाह के अंशों से जानते हैं कि यह एक शोक-घोष था। वे कभी-कभी किसी की मृत्यु होने पर अंतिम संस्कार में इस विस्मयादिबोधक का प्रयोग करते हैं।

और अगर मेरे पिता मर गए हैं, तो मैं उनकी लाश के ऊपर खड़ा होकर होई अवी कहूँगा। हाय मेरे पिता! मैं अपने पिता की मृत्यु पर विलाप कर रहा हूँ।

और इसलिए मुझे लगता है कि भविष्यवक्ता इसे इसी तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। यह एक ऐसा शब्द है जिससे लोग जुड़ेंगे। यह उनके दिलों में गूँजेगा।

वे इसे मौत से जोड़ेंगे। और इसलिए अगर आप "होय" सुनते हैं, तो आप सोच रहे होंगे कि क्या संदर्भ से यह स्पष्ट है कि इसका इस्तेमाल सिर्फ तटस्थ रूप से नहीं किया जा रहा है। आप सोच रहे होंगे कि ओह मौत।

कौन मरा। और भविष्यवक्ता तुम्हें क्या बता रहे हैं? वे राष्ट्र की मृत्यु, नेतृत्व की मृत्यु का पहले से ही वर्णन कर रहे हैं।

और इसलिए, भविष्यवक्ता उपदेशक हैं। और इसलिए, वे जानते हैं कि लोगों का ध्यान कैसे आकर्षित किया जाए। वे जानते हैं कि अपनी बात कैसे लोगों तक पहुँचाई जाए।

और इसलिए हाय तुम पर जो प्रभु के दिन की प्रतीक्षा करते हो। जब मैं अनुवाद कर रहा था, कुछ NET बाइबल अनुवाद कर रहा था, तो कभी-कभी मैं हाय का अनुवाद इस तरह करता था, और अधिक स्पष्ट रूप से कहूँ तो तुम जो प्रभु के दिन की प्रतीक्षा करते हो, मृत के समान हो, ताकि इस अंतर्विरोध का प्रभाव स्पष्ट हो सके। मेरा मतलब है, हाय कुछ नकारात्मक संकेत देता है।

लेकिन मेरे लिए, मैं संस्कृति में इसके उपयोग के अर्थ को और लोगों के साथ इसकी प्रतिध्वनि को व्यक्त करने का प्रयास कर रहा था। इसलिए तुम जो प्रभु के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हो, तुम मृत के समान हो। तुम देख रहे हो कि यह मृत्यु विषय अध्याय 5, पद 1 से 17 तक कैसे जारी है, जो विलाप और विलाप से शुरू हुआ, और उसी तरह समाप्त हुआ क्योंकि प्रभु मिस्र की तरह वहाँ से गुज़रेंगे और न्याय करेंगे।

लेकिन आशा है। अगर आप पश्चाताप करें और प्रभु की आज्ञा मानकर उसे खोजें, तो आप प्रभु के इस दिन से बच सकते हैं या कम से कम इससे बच सकते हैं। पद 21 में वे आगे कहते हैं।

मैं घृणा करता हूँ। अध्याय 5 में, हमने घृणा शब्द का प्रयोग देखा था। और प्रभु ने उत्तरी राज्य के लोगों और खासकर उनके नेतृत्व से कहा कि वे न्याय से घृणा करते हैं।

वे न्याय से घृणा करते हैं। और उन्हें सचमुच अपने पाप से घृणा करनी चाहिए, लेकिन वे न्याय से घृणा करते हैं। और इसलिए अब, विडंबना यह है कि प्रभु उन्हें बताने जा रहे हैं कि उन्हें किससे घृणा है।

और भविष्यवक्ता अक्सर ऐसा ही करते हैं। वे कोई मुख्य शब्द लेते हैं। हम उन्हें मुख्य शब्द कहते हैं।

और वे इसे दोहराते रहेंगे, अलग-अलग अर्थों और तरीकों से इस्तेमाल करते हुए, जब तक कि आप उन अंशों को एक साथ जोड़कर एक विषय विकसित नहीं कर लेते। आपको न्याय से नफ़रत है। मैं आपको बताता हूँ कि मुझे किससे नफ़रत है।

मुझे आपके धार्मिक त्योहारों से नफ़रत है। मैं उनसे घृणा करता हूँ। तो वे औपचारिकता निभा रहे थे।

हम यह पहले ही देख चुके हैं। वे बलिदान और भेंट चढ़ाने में लगे हुए हैं, और वे धार्मिक त्योहार मना रहे हैं जो प्रभु ने व्यवस्था में निर्धारित किए थे। तुम्हारी सभाएँ मेरे लिए दुर्गन्ध हैं।

तो तुम्हें न्याय से नफ़रत है। मुझे तुम्हारे पाखंड से नफ़रत है। तुम्हारे खोखले, खोखले धर्म से।

तुम मेरी बात नहीं मान रहे हो। तुम अपने पड़ोसी से प्यार नहीं करते। लेकिन तुम खोखले कर्मकांडों के ज़रिए मेरे लिए अपना प्यार दिखाने की कोशिश कर रहे हो।

और मुझे उन त्योहारों से नफ़रत है। इसका मतलब यह नहीं कि उन त्योहारों के लिए कोई जगह नहीं है। जब लोग प्रभु के आज्ञाकारी होते हैं, तो हाँ, उन्होंने उन्हें विभिन्न चीज़ों की याद में ये त्योहार दिए हैं।

लेकिन वह नहीं चाहता कि ये लोग उसके सामने आएँ और उसके नाम पर त्योहार मनाएँ। और यह सिर्फ़ दिखावा है। चाहे तुम मेरे लिए होमबलि और अन्नबलि भी लाओ, मैं उन्हें स्वीकार नहीं करूँगा।

और यहीं से मैं इस खंड का विषय ले रहा हूँ, आज्ञाकारिता, बलिदान नहीं। चाहे तुम उत्तम संगति के लिए भेंट चढ़ाओ। एनआईवी अनुवाद के अनुसार, मैं उनकी कोई परवाह नहीं करूँगा।

मुझे नेट अनुवाद ज़्यादा पसंद है। यह इब्रानी भाषा के ज़्यादा करीब है। और इसमें मूलतः लिखा है, "मैं तुम्हारे मोटे बछड़ों के मेलबलि पर कृपा नहीं करूँगा।"

तो यह इब्रानी पाठ में ज़्यादा स्पष्ट है। और मुझे लगता है कि एनआईवी ने इसे उस बिंदु पर थोड़ा ज़्यादा सरल बना दिया है। लेकिन हम एनआईवी पर वापस जाएँगे।

तो मैं आपकी भेंट स्वीकार नहीं करूँगा। बिल्कुल नहीं। संगति शांति भेंट।

अपने गीतों का शोर दूर करो। मैं तुम्हारी वीणाओं का संगीत नहीं सुनूँगा। संगीत में प्रभु की स्तुति करना एक अद्भुत बात है।

नए नियम में पौलुस ने हमें ऐसा करने के लिए कहा है। यह एक अद्भुत बात है। लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ जो बात डरावनी है वह यह है कि प्रभु वास्तव में इस प्रकार की आराधना को स्वीकार नहीं करते जब तक कि आप आज्ञाकारी न हों और अपने भाई-बहनों, अपने पड़ोसियों से प्रेम न करें।

तो संगीत ईश्वर के प्रति हमारे प्रेम को व्यक्त करने का एक तरीका है, लेकिन ईश्वर उससे न केवल ऊर्ध्वधर, बल्कि क्षैतिज भी अपेक्षा रखते हैं। इसलिए यहाँ कुछ रोचक सिद्धांत सामने आते हैं जो बताते हैं कि ईश्वर आराधना में क्या अपेक्षा रखते हैं। वे धार्मिक उत्सव चाहते हैं।

उसे प्रसाद चाहिए। उसे आज्ञाकारी लोगों के गीत चाहिए। वरना तुम बस पाखंडी हो।

और फिर पद 24 में, वह एक तरह से उस विषय पर लौटता है जो पहले भी उठा था, न्याय का पूरा विषय सामने आया। यह आमोस के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। दरअसल, कुछ लोग कहेंगे कि आमोस के लिए सबसे बड़ी बात न्याय है।

होशे की सबसे बड़ी समस्या मूर्तिपूजा है। यह अति सरलीकरण है। होशे न्याय की बात करता है, लेकिन वह मूर्तिपूजा की कड़ी निंदा करता है।

आमोस अन्याय की कड़ी निंदा करता है, लेकिन वह मूर्तिपूजा के बारे में भी बात करता है। हमने यह देखा है। और यही दो बड़ी समस्याएँ हैं जिनका सामना भविष्यवक्ताओं ने आज के समय में लोगों के सामने किया।

लेकिन श्लोक 24 एक प्रसिद्ध श्लोक है। मुझे लगता है मार्टिन लूथर किंग ने इसे उद्धृत किया था। लेकिन न्याय को नदी की तरह बहने दो, और धर्म को कभी न रुकने वाली धारा की तरह।

और इसलिए वह यहाँ एक सदाबहार नदी की बात कर रहे हैं, एक ऐसी नदी जो कभी सूखती नहीं। और उन्होंने कहा कि ईश्वर यही चाहता है। वह हर समय न्याय चाहता है, एक कभी न रुकने वाली धारा की तरह बहता रहे क्योंकि उनके पास वादियाँ थीं।

उनके यहाँ ज़मीन पर नाड़ियाँ हैं, और ये मौसमी नदियाँ हैं जिनमें अचानक बाढ़ आ सकती है। बरसात के मौसम में इनमें पानी तो बहुत होता है, लेकिन ये सूख जाती हैं। और यही तो प्रभु नहीं चाहते।

वह एक सतत, कभी न रुकने वाली धारा चाहता है, और वह चाहता है कि न्याय भी वैसा ही हो। अगले तीन पद एक बड़ी समस्या हैं। और आपको बस अनुवादों की तुलना करनी है।

और यह स्पष्ट है कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि यहाँ क्या हो रहा है। हम जानते हैं कि ये शब्द क्या कह रहे हैं, लेकिन साथ ही, हमें यह भी नहीं पता कि ये सब एक साथ कैसे जुड़ता है। पद 25 का अनुवाद एनआईवी द्वारा किया गया है, और यह एक प्रश्न है।

यह इब्रानी भाषा में एक प्रश्न है। इसे इस तरह चिह्नित किया गया है। हे इस्राएलियों, क्या तुम मेरे लिए 40 वर्ष तक जंगल में बलिदान और भेंट चढ़ाते रहे? खैर, जिस संदर्भ में वह उनकी भेंटों को अस्वीकार कर रहा है, उससे ऐसा लगता है कि वह इस प्रश्न का उत्तर 'नहीं' में मिलने की उम्मीद कर रहा है।

लेकिन हम जानते हैं कि प्रभु ने लोगों को बलिदान और भेंटें दी थीं, और उनसे भेंट चढ़ाने की अपेक्षा की थी। आदर्श रूप से, वे तब तक ऐसा नहीं कर सकते थे जब तक वे उस देश में प्रवेश नहीं कर लेते, लेकिन मैं इस प्रश्न का उत्तर हाँ में देना चाहूँगा, लेकिन तब यह वास्तव में संदर्भ के अनुकूल नहीं होता। इसलिए कुछ लोग इसका अर्थ यह लगाएँगे कि, यह एक तरह से ना है, लेकिन यह वह प्राथमिक चीज़ नहीं थी जो मैं चाहता था।

आपको यिर्मयाह 7L21 से 24 में भी यही समस्या है, जहाँ यिर्मयाह कहता प्रतीत होता है कि प्रभु ने शुरू में भेंट और बलिदान स्वीकार नहीं किए। उसे आज्ञाकारिता की चिंता थी। खैर, उसे हमेशा बलिदान से ज़्यादा आज्ञाकारिता की चिंता रही है, और शायद यही बात यहाँ भी कही जा सकती है।

लेकिन मुझे यह बात पसंद आई कि आपने 25 और 26 को एक साथ उस आलंकारिक प्रश्न का एक हिस्सा मान लिया। तो क्या इस्राएलियों, 25 में तुम मेरे लिए 40 साल तक जंगल में बलिदान और भेंट लाए थे? और अपने राजा के मंदिर, अपनी मूर्तियों के आसन, अपने परमेश्वर के तारे को भी ऊँचा किया था, जो तुमने अपने लिए बनाए थे। ठीक है, बलिदान, भेंट तो शुरू से ही थे।

मैं तो शुरू से ही इन्हें चाहता था, और जब तुमने मुझे जंगल में शुरुआत में ये भेंट की थीं, तो अब मुझे पता है कि सोने के बछड़े वाली घटना हुई थी, लेकिन वह सीनाई पर्वत पर बहुत पहले हुई थी, और मुझे लगता है कि प्रभु क्या कह रहे हैं, जंगल में, मैं भेंट और बलिदान चाहता था। तुमने इन्हें दिया, लेकिन क्या तुमने उस समय इसे मूर्तिपूजा के साथ जोड़ दिया था? तो यह बात समझ में आती है। नहीं, लेकिन अब तुम यही कर रहे हो।

तुम मुझे चढ़ावा चढ़ा रहे हो, और तुम्हें न्याय की कोई परवाह नहीं है, और तो और, तुम अपने चढ़ावे में दूसरे देवताओं को चढ़ावा भी मिला रहे हो। तुम बहुदेववादी हो। मैं उन अवज्ञाकारी लोगों से यह बर्दाश्त नहीं कर सकता जो मेरे साथ दूसरे देवताओं की भी पूजा करते हैं।

मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता। और हाँ, भेंट और बलिदान बहुत पहले से ही आ रहे थे, और मैं उन्हें चाहता था, लेकिन इस तरह नहीं, और जंगल में ऐसा नहीं किया जाता था। इसलिए, आप श्लोक 27 को परिणामों के बारे में बात करते हुए देखते हैं।

इसलिए, मैं तुम्हें दमिश्क के पार बंधुआई में भेज दूँगा, यहोवा कहता है, जिसका नाम सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, और एक बार फिर, वह सेनाओं का परमेश्वर, सेनाओं का परमेश्वर है। यहोवा, जो सेनाओं का परमेश्वर है, उसका नाम यही है। तो इस अध्याय में अन्याय और मूर्तिपूजा दोनों की निंदा की गई है, और अंत में ध्यान दें, मैं तुम्हें बंधुआई में भेजने वाला हूँ, और यही कारण है कि मैं इस विशेष भाग को उद्धार के इतिहास के खुलासे के रूप में समझता हूँ।

अध्याय 3 से 6 के लिए मेरा समग्र शीर्षक यही है, और निर्वासन के बारे में सोचिए। यह उनके उद्धार के इतिहास का नाश है, और जैसा कि हमने पिछले व्याख्यान में कहा था, उद्धार का इतिहास वास्तव में कुलपिताओं से किए गए इस वादे से शुरू होता है कि प्रभु उन्हें एक भूमि देंगे, उनकी संख्या बढ़ाएँगे और उन्हें एक महान राष्ट्र बनाएँगे, लेकिन यह तब पूरी तरह से लागू होता है जब वे मिस्र में होते हैं और मूसा वहाँ जाता है, और मूसा के नेतृत्व में, प्रभु अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाते हैं। वे लाल सागर पार करते हैं।

यह एक तरह से परम मुक्तिदायक घटना है। उन्हें गुलामी से आज़ादी मिली। वे सिनाई जाते हैं।

उन्हें कानून मिलता है। वे उसकी आज्ञा नहीं मानते। वे सवाल करते हैं कि क्या परमेश्वर सचमुच उन्हें ज़मीन दे सकता है, और इसलिए प्रभु उन्हें जंगल में भटकने देता है।

नई पीढ़ी आती है, और यहोशू, कालेब और प्रभु में विश्वास रखने वाले अन्य लोगों के नेतृत्व में, वे कनानी लोगों पर विजय प्राप्त करते हैं, और इस प्रकार यह उद्धार का इतिहास है। यह दाऊद के माध्यम से एक प्रकार से आगे बढ़ता है। दाऊद साम्राज्य का विस्तार करता है और प्रभु ने यहोशू के माध्यम से जो शुरू किया था, उसे एक प्रकार से पूरा करता है, और इसलिए हम इसे उद्धार का इतिहास कहते हैं, लेकिन हम भविष्यवक्ताओं, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में जो देखते हैं, वह यह है कि आप वाचा का उल्लंघन कर रहे हैं, और इसलिए वाचा में ये शाप, ये धमकी भरे न्याय, लैव्यव्यवस्था 26, व्यवस्थाविवरण 28 शामिल हैं, और ये वाचा के शाप आपके विरुद्ध लागू होने वाले हैं।

ईश्वर आपका न्याय करेगा, और यह न्याय विभिन्न रूपों में आ सकता है, जैसे अकाल, सूखा, या जनसंख्या को नष्ट करने वाला आक्रमण। आपके बच्चे मारे जा सकते हैं। आपके शहरों की घेराबंदी इस हद तक की जा सकती है कि आप इतने हताश हो जाएँ कि आप नरभक्षण का सहारा लें, लेकिन अंततः निर्वासन।

यही सबसे बड़ी सज़ा है। अगर तुम नहीं बदले, तो प्रभु तुम्हें निर्वासन में भेजने के लिए मजबूर हो जाएँगे, और अगर तुम इसके बारे में सोचो, तो तुम अपनी आज़ादी खो चुके हो। अब तुम उस देश में नहीं हो, और मुक्ति का इतिहास उलझ गया है, और सब उलट गया है।

बेशक, जैसा कि हम आमोस के अंत में देखेंगे, अच्छी खबर यह है कि प्रभु उद्धार के इतिहास को फिर से लिखने जा रहे हैं। वह इसे फिर से करने जा रहे हैं। एक दूसरा निर्गमन होने वाला है।

यशायाह अध्याय 40-55 में, और अन्य अंशों में भी, इस बारे में बात करता है, इसलिए प्रभु अपने लोगों को फिर से दासता से मुक्त करेगा और उन्हें वापस अपने देश, आकोर की घाटी, यानी संकट की घाटी में ले जाएगा, क्योंकि यही वह समय था जब आकान ने यरीहो से चीज़ें चुराई थीं और पूरी विजय को खतरे में डाल दिया था। यह आशा का द्वार बनेगा, इसलिए उद्धार का इतिहास नवीनीकृत और पूर्ण होगा, लेकिन इस बीच, आप उस पीढ़ी का हिस्सा नहीं बनना चाहेंगे जो यह सब उलझा हुआ और उलटा हुआ देखती है। तो, अध्याय 5 में यह एक बार फिर एक तरह के खट्टे नोट पर समाप्त हो रहा है। अध्याय 6 में जाने से पहले, मैं आमोस के प्रत्येक प्रमुख भाग के लिए सिद्धांत बना रहा हूँ, और मैंने अध्याय 5 के दो मुख्य भाषणों को एक में मिला दिया है। तो, यहाँ मेरा सारांश है, अध्याय 5 के लिए मेरा सिद्धांत। यह थोड़ा लंबा है क्योंकि अध्याय 5 थोड़ा लंबा है, 27 श्लोक हैं, और इन सिद्धांतों को एक साथ रखने में, मैं किसी भी इकाई के सभी प्रमुख विषयों को शामिल करने का प्रयास करता हूँ।

इसलिए, परमेश्वर कर्मकांडों से ज़्यादा रिश्तों को प्राथमिकता देता है, और रिश्तों से मेरा मतलब है, उसके साथ और अपने पड़ोसी के साथ रिश्ता। वह उन लोगों से प्रसन्न नहीं होता जो धार्मिक गतिविधियों में शामिल होते हुए भी उसके नैतिक मानकों का उल्लंघन करते हैं। अगर हम इसे थोड़ा व्यापक बना सकें और अध्याय 4 के विषय को सचमुच दोहरा सकें, तो हम "मुझे खोजो और जीवित रहो" के सिद्धांत के आधार पर यह भी कह सकते हैं कि परमेश्वर उन लोगों को, जो उसके मानकों का उल्लंघन करते हैं, पश्चाताप करने और न्याय से बचने का अवसर देता है।

यह एक अतिरिक्त कथन हो सकता है जिसे हम सारांश में शामिल कर सकते हैं, क्योंकि इसका एक सकारात्मक पक्ष भी है। प्रभु उनसे अपील कर रहे हैं। यह सिर्फ़ सीधा न्याय-भाषण नहीं है।

मंच के आलोचक जैसे उपदेश देते हैं, "मुझे खोजो और जियो", जहाँ आप एक आदेश देते हैं और फिर एक सकारात्मक परिणाम देते हैं, इस मामले में। तो, अब हम अध्याय 6 की ओर बढ़ने के लिए तैयार हैं, जो कि पुस्तक की इस मध्य इकाई का अंतिम भाग है, और मैंने अध्याय 6 को दो भागों में विभाजित किया है। इसमें 14 पद हैं, और इसलिए पहले सात पद, जिन्हें मैं पार्टी का समय कहता हूँ, समाप्त हो गए हैं।

और फिर अध्याय के दूसरे भाग, श्लोक 8 से 14 तक, मृत्यु की दुर्गंध एक विकृत जाति पर छा जाती है। तो, एक बार फिर, इन श्लोकों में, एक छोटे अध्याय में, मुख्य ज़ोर न्याय पर है। तो, आइए श्लोक 1 से शुरू करें, और पहले शब्द पर ध्यान दें, जिस शब्द के बारे में हमने बात की थी, हाय, हाय, एक बार फिर।

तो, अध्याय 5 की शुरुआत में पद 18 में, और फिर यहाँ भी, होई का ज़िक्र था। तो, अध्याय 5 के पहले भाग में मृत्यु की इस धमकी के ठीक बाद, लेकिन आज्ञाकारिता के ज़रिए जीवन पाने का अवसर मिलने पर, हमें दो शोकपूर्ण भविष्यवाणियाँ, मानो पहले से ही अंतिम संस्कार की पुकारें मिलती हैं। तो, एक बार फिर, सिथ्योन में तुम पर जो आत्मसंतुष्ट हो, हाय!

तो, हम कह सकते हैं, सिथ्योन में जो लोग आत्मसंतुष्ट हैं, वे मृत समान हैं, और सामरिया पर्वत पर सुरक्षित महसूस करने वाले तुम, तुम उस अग्रणी राष्ट्र के प्रतिष्ठित पुरुष हो जिसके पास इस्राएल के लोग आते हैं। ऐसा लगता है कि वह यहाँ इन राजधानियों के नेतृत्व को लक्ष्य करके बात कर रहे हैं, लेकिन शायद तुम यहाँ रुककर पूछ रहे हो, सिथ्योन? वह यरूशलेम है। वह यरूशलेम है।

मुझे लगा था कि आमोस का मुख्य संदेश उत्तरी राज्य के लिए था। खैर, था भी यही। यह तो ज़ाहिर है।

वह उत्तर की ओर यात्रा करता है। बेतेल के पुजारी के साथ उसका झगड़ा हो जाता है, जैसा कि हम अध्याय 7 में देखेंगे, और इसलिए, हाँ, उसका मुख्य संदेश यूसुफ के गोत्रों, उत्तरी राज्य इस्राएल के लिए था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह यरूशलेम या यहूदा को संदेश में शामिल नहीं कर सकता, क्योंकि याद रखें, भविष्यवाणियों में, इस्राएल से ठीक पहले यहूदा सातवें स्थान पर था, और इसलिए यहूदा आने वाले न्याय से बच नहीं पाएगा, और इसलिए यह भी हो सकता है कि आमोस उन्हें इसलिए शामिल कर रहा हो क्योंकि उन्हें यह सुनने की ज़रूरत है कि वह सामरिया के नेताओं से क्या कह रहा है क्योंकि यहूदा का नेतृत्व और यरूशलेम का नेतृत्व भी कुछ ऐसा ही दिखने लगा है, और इसलिए वह चाहता है कि यह संदेश उन पर भी लागू हो। एक और विकल्प यह है कि उत्तरी राज्य में सेवा पूरी करने के बाद, वह अपने घर तेकोआ लौट आया और कुछ हद तक एक भविष्यवक्ता के रूप में कार्य करता रहा, और वह ऐसा करना चाहता था; हो सकता है कि प्रभु ने उसे बाद में इसे जोड़ने के लिए प्रेरित किया हो।

यह ज़रूरी नहीं कि यह 150 साल बाद का कोई संपादन हो या ऐसा ही कुछ। यह ज़रूरी नहीं कि ऐसा ही हो। हो सकता है कि आमोस ने यहूदा के लोगों के लिए भी अपना संदेश तैयार किया हो।

तो, किसी भी तरह से, यहाँ यह समझ में आता है, लेकिन शुरुआत में यह थोड़ा आश्चर्यजनक लगता है। तो, सिथ्योन भी सामरिया जैसा दिखने लगा है, और इसलिए वह उन्हें भी इसमें शामिल करता है। तो, आप जो सामरिया पर्वत पर सुरक्षित महसूस करते हैं, याद रखें कि यह एक ऐसा समय था, हालाँकि प्रभु उनका न्याय करने और उनका ध्यान आकर्षित करने लगे थे, लेकिन जाहिर तौर पर वे इसे अनदेखा कर रहे थे, और यारोबाम द्वितीय के शासनकाल में वे फल-फूल रहे थे।

जैसा कि हम इस अध्याय में आगे देखेंगे, उन्होंने वास्तव में कुछ सैन्य विजय प्राप्त की थी, और इसलिए वे बहुत अच्छा महसूस कर रहे हैं। वे सुरक्षित और समृद्ध महसूस कर रहे हैं। वे और भी अधिक सुरक्षा की आशा कर रहे हैं जब प्रभु उनके सभी शत्रुओं का नाश कर देंगे, लेकिन इस

समय वे बहुत अच्छा महसूस कर रहे हैं, और आमोस आकर कह रहा है, नहीं, यह झूठी सुरक्षा है।

तुम्हारी सारी सफलताएँ मूर्खों के लिए सोने की खान हैं। मैं अब शब्दों को थोड़ा बदलकर कह रहा हूँ, और मौत बिलकुल पास ही है। मौत आसन्न है।

आयत 2 एक और आयत है जो व्याख्याकारों के बीच विवादास्पद है। इसमें कहा गया है, "कलनेह जाओ और उसे देखो। वहाँ से महान हम्मत जाओ।"

ये अरामी नगर हैं, और फिर पलिशती राज्य के गत नगर में जाएँ। वहाँ पाँचवाँ पलिशती नगर है जिसका ज़िक्र पिछली भविष्यवाणी में नहीं था, लेकिन आमोस को इसकी जानकारी है, और उस पर न्यायदंड आ चुका है। क्या वे तुम्हारे दोनों राज्यों से बेहतर हैं? क्या उनकी ज़मीन तुम्हारी ज़मीन से बड़ी है? इस प्रश्न का अर्थ समझना मुश्किल है, क्योंकि यह अलंकारिक लगता है।

कुछ लोग तर्क देंगे कि नेता अपने लोगों को यही बता रहे हैं। वे अपनी अहमियत और अपनी ताकत का बखान कर रहे हैं, क्योंकि उत्तरी राज्य इन कुछ अन्य राज्यों की तुलना में बहुत बड़ा था, और इसलिए, नेट बाइबल की तरह, मुझे लगता है, मैं इसे तुरंत जाँचने जा रहा हूँ। नेट बाइबल में, वे लोगों से कहते हैं।

खैर, यह हिब्रू पाठ में नहीं है, और नेट बाइबल किसी को धोखा देने की कोशिश नहीं कर रही है। वे कहते हैं कि लोग व्याख्यात्मक हैं और जोड़ते हैं, और फिर वे बताते हैं कि उन्हें ऐसा क्यों लगता है कि लोग बात कर रहे हैं। मेरा मतलब है, नेता यहाँ लोगों से बात कर रहे हैं, अपनी ज़मीन का बखान कर रहे हैं।

तो, इस मामले में, वे कह रहे हैं, अरे, इन दूसरी जगहों पर जाकर देखो। हम उनसे बेहतर हैं। हमें उन नकारात्मक निर्णयों का सामना नहीं करना पड़ेगा जो उन्हें झेलने पड़े।

दूसरा विकल्प यह है कि प्रभु नेतृत्व से बात कर रहे हैं, और यही इसे समझने का सबसे स्वाभाविक तरीका लगता है। उन्होंने अभी-अभी नेताओं की निंदा की है। धिक्कार है तुम पर, और वह उनसे सीधे पद 3 में बात करने वाले हैं, तो पद 2 में क्यों नहीं? और मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि कलनेह जाओ, ग्रेट हम्मत जाओ, गत जाओ।

क्या वे तुम्हारे दोनों राज्यों से बेहतर हैं, या उनसे बेहतर हैं? मुझे लगता है कि वह यह कहना चाह रहे हैं कि भले ही तुम मेरे वाचा के लोग हो, और पृथ्वी के सभी राष्ट्रों में से केवल तुमको ही मैंने अध्याय 3 में जाना है, फिर भी एक और अर्थ में तुम बाकी राष्ट्रों से अलग नहीं हो। तुम अद्वितीय और धन्य हो, इसका एकमात्र कारण यह है कि मैंने तुम्हारी रक्षा की है और तुम्हें आशीर्वाद दिया है। लेकिन दूसरी ओर, तुम केवल एक राष्ट्र हो, और मैं राष्ट्रों पर प्रभुता रखता हूँ, और तुम्हें छूट नहीं मिलती।

आप वाचा से अछूते नहीं हैं। इसलिए, जैसे मैंने इन जगहों पर न्याय किया है, और वह बहुत पहले हुआ था, वास्तव में 9वीं शताब्दी में, वैसा ही फिर से होगा जब तिग्लथ-पिलेसर तृतीय असीरिया से

आएगा, लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ है। और वह कह रहा है, आपको लग सकता है कि आपके पास उनसे ज़्यादा इलाका है।

मैं इसे बदल सकता हूँ। मैं तुम्हारा क्षेत्र कम कर सकता हूँ, और ठीक यही उसने तब किया जब इसके कुछ समय बाद असीरियाई लोग आए। उन्होंने उत्तरी राज्य के पूरे क्षेत्र को प्रांतीय दर्जा दे दिया, और इस छोटे से राज्य को बीच में ही छोड़ दिया।

और इसलिए, मुझे लगता है कि प्रभु यही कह रहे हैं। यह मत सोचो कि तुम्हारा विशेष दर्जा तुम्हें मेरे न्याय से अलग करता है। यह मत सोचो कि तुमने जो सफलताएँ प्राप्त की हैं, जो समृद्धि तुम्हें प्राप्त है, और जो सैन्य विजयें तुमने प्राप्त की हैं, वे तुम्हें इन अन्य राष्ट्रों से अलग करती हैं।

नहीं, मैं आज्ञाकारिता की माँग कर रहा हूँ। इसलिए, पद 2 के बारे में मेरी प्राथमिकता यही है कि इसे प्रभु द्वारा अगुवों से कही गई बातों की निरंतरता के रूप में देखा जाए। तुम विपत्ति के दिन को टाल देते हो, पद 3, और आतंक का राज निकट लाते हो।

तो, वह, और दरअसल आतंक एक ऐसा शब्द है जिससे हम परिचित हैं, हमास, हमास, हिंसा। इसलिए, वह उन पर न्याय के दिन को टालने, यह न समझने का आरोप लगा रहे हैं कि वह आ रहा है, और उस पर विचार न करना चाहते हैं। और इसके बजाय, वे अपने ही देश में हिंसा के लिए ज़िम्मेदार हैं, क्योंकि प्रभु के दृष्टिकोण से, वे लोगों के साथ जो कर रहे हैं, उनकी ज़मीन उनसे छीन रहे हैं, उन्हें बेहद कमज़ोर बना रहे हैं।

और मुझे यकीन है कि कई मामलों में, लोग भूख से मर गए, और बच्चे इन दमनकारी उपायों के कारण मर गए। प्रभु इसे हिंसा मानते हैं। और इसलिए, वह उन्हें इसके लिए बुला रहे हैं।

और फिर, वह उनके रहने के तरीके का वर्णन कर रहे हैं। हम पहले ही गर्मियों के घर, सर्दियों के घर, और इन सब चीज़ों, और हाथीदांत के बारे में इसका उल्लेख देख चुके हैं। और वह यहाँ इसके बारे में थोड़ा और बात करने वाले हैं।

आप हाथीदांत से सजे बिस्तरों पर लेटते हैं और अपने सोफ़ों पर आराम फरमाते हैं। आप बेहतरीन मेमनों और मोटे बछड़ों का भोजन करते हैं। तो, आप काफ़ी संपन्न हैं।

हाँ, आप बहुत समृद्ध और धनी हैं। आपके पास आराम करने के लिए अच्छे बिस्तर और सोफ़े हैं। आप सबसे अच्छा खाना खाते हैं।

तुम डेविड की तरह वीणा बजाते हो। मुझे लगता है कि यह थोड़ा व्यंग्यात्मक है। तुम खुद को डेविड जैसा समझते हो, और संगीत वाद्ययंत्रों में सुधार करते हो।

तो, आपके पास संगीत वाद्ययंत्रों के साथ खेलने, झंकार करने और गाने रचने का समय होता है। आप कटोरी भरकर शराब पीते हैं और बेहतरीन लोशन इस्तेमाल करते हैं। इसलिए, वे खुद को राष्ट्र का मुखिया, राष्ट्राध्यक्ष मानते हैं।

वे सबसे पहले और सबसे ज़्यादा उल्लेखनीय हैं। वे सबसे अच्छे लोशन की माँग करते हैं, सबसे पहले और सबसे ज़रूरी लोशन। यहाँ का दर्शन यही है कि केवल सर्वोत्तम के लिए सर्वोत्तम ही सबसे अच्छा है।

तुम बेहतरीन मलहम लगाते हो, लेकिन यूसुफ की बर्बादी पर शोक नहीं करते। तुम यूसुफ की बर्बादी पर शोक नहीं करते, इसलिए तुम निर्वासन में जाने वालों में सबसे पहले होगे। तुम्हारी दावतें और मौज-मस्ती बंद हो जाएगी।

यूसुफ़ का विनाश, इस पर बहस होती है कि इसका क्या मतलब है। आप हमेशा ऐसा नहीं करना चाहेंगे, लेकिन कभी-कभी आपके पास एक दोहरा अर्थ होता है। आपके पास एक दोहरा अर्थ होता है जो एक ही समय में क्रियाशील होता है।

एक दृष्टिकोण यह है कि यूसुफ का विनाश यूसुफ का नैतिक पतन है, और यूसुफ उत्तरी राज्य का प्रतीक है। इसलिए, आप उस राष्ट्र के नैतिक पतन पर शोक नहीं करते जहाँ लोग झूठ बोल रहे हैं, धोखा दे रहे हैं और दूसरों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं। ऐसा हो सकता है।

या फिर आप न्याय के समय यूसुफ के आने वाले विनाश पर शोक नहीं करते। और मुझे लगता है कि इस मामले में, मैं आमतौर पर एक या दूसरे को चुनना पसंद करता हूँ, लेकिन भविष्यवक्ता कवि होते हैं, और वे बहुत ही अलंकारपूर्ण होते हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि इस विशेष मामले में, आप इसे एक ही समय में दोनों तरह से ले सकते हैं क्योंकि वे आपस में जुड़े हुए हैं।

यूसुफ का नैतिक पतन राष्ट्रीय आपदा और यूसुफ की बर्बादी का कारण बनेगा। और इसलिए, मुझे लगता है कि दोनों ही बातें मौजूद हैं, और मुझे लगता है कि जैसे ही दर्शक इसे सुनते हैं और सोचने लगते हैं, इसका क्या मतलब है? वे शायद इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि, ओह, मैं समझ गया कि वह क्या कह रहा है। ओह, बहुत ही चालाक, अमोस।

और फिर वह कहता है, "इसलिए, तुम सबसे पहले बंधुआई में जानेवालों में से होगे। तुम्हारा भोज और मौज-मस्ती बंद हो जाएगी।" और यह भी एक और बात है जो भविष्यवक्ता करते हैं।

वे शब्दों के खेल में उलझे रहेंगे। और इसलिए, उन्होंने इस्तेमाल किया, हिब्रू में एक मूल है, या, आप जानते हैं, रीश अल- आशिन , एक रोश , सिर। और सिर से, आप किसी चीज़ के पहले, सबसे उल्लेखनीय के बारे में बात कर सकते हैं।

और इसी मूल से एक शब्द और भी आया है, रीशिट । यह उत्पत्ति 1.1 में ही है, बेरेशिट - यानी शुरुआत में। तो, रीशिट इसी शुरुआत के विचार से आया है।

यह अस्थायी, शुरुआती हो सकता है। यह गुणवत्तापूर्ण, सर्वोत्तम भी हो सकता है। और इसलिए, वह यहाँ उसी मूल पर खेल रहा है।

वह कह रहे हैं, "आप देश के रईस हैं। आप सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, कुलीन वर्ग के उल्लेखनीय व्यक्ति हैं। आप सर्वश्रेष्ठ हैं।"

और तुम तो कटोरी भर शराब पीते हुए अपने शरीर पर लगाने के लिए बेहतरीन लोशन, बेहतरीन लोशन, बेहतरीन कालिटी के लोशन भी माँगते हो। खैर, मैं तुम्हें बताता हूँ। प्रभु तुम्हें सम्मानित करेंगे।

सबसे आगे रहोगे। तुम पंक्ति के सबसे आगे रहोगे।

आगे होंगे। आप पंक्ति के बिल्कुल आगे होंगे। आप ऐसा इसलिए करेंगे क्योंकि लक्ष्य भाषा, अंग्रेज़ी, की अपनी सीमाएँ हैं और वह हिब्रू भाषा में कही गई बात को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर सकती।

लेकिन अगर हम इन तीनों ग्रंथों में "पहले" शब्द का इस्तेमाल करें, तो शायद "लोशनों में पहला" शब्द थोड़ा अजीब लगेगा, लेकिन "लोशनों में पहला" शब्द थोड़ा अजीब लगता है, "लोगों में पहला"। यह श्लोक 7 में काम करता है। लेकिन विडंबना यह है कि, अच्छा ही अच्छा होता है।

खैर, हर कोई निर्वासन में जा रहा है, लेकिन आपको कतार में सबसे आगे होना होगा। आप शुरुआत कर सकते हैं। आप निर्वासन में सबसे आगे, सबसे आगे, सबसे आगे हो सकते हैं।

और इसलिए अपराध के आयाम के अनुरूप एक सज़ा भी है, जिसे हम ईश्वर का न्याय कहते हैं। आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत। और यह भविष्यवक्ताओं में मौजूद है, लेकिन यह हमेशा उतना स्पष्ट नहीं होता।

उनके लालच और लोगों का शोषण करके अर्जित की गई अत्यधिक संपत्ति के कारण, उनकी सज़ा उनके अपराध के बराबर ही होगी। और अक्सर इसी तरह के शब्दों के खेल के ज़रिए, पैट्रिक मिलर नाम के एक विद्वान ने बहुत पहले एक बहुत अच्छी किताब लिखी थी। यह एक छोटी सी किताब है, जो भविष्यवक्ताओं में पाप और न्याय पर एक मोनोग्राफ जैसी है।

और वह यह दिखाने की कोशिश कर रहा था कि न्याय पाप के अनुरूप होता है। और आप इसे यहाँ देख सकते हैं। यह उनके लिए उचित सज़ा है।

वे सबसे आगे रहना चाहते हैं। वे बाकी लोगों से अलग होना चाहते हैं और सबसे बेहतरीन चीज़ों का आनंद लेना चाहते हैं। और विडंबना यह है कि निर्वासितों की कतार में उनकी यही स्थिति होगी।

मैं यहाँ थोड़ा पानी पीने जा रहा हूँ। और हम श्लोक 8, 8 से 14 तक आगे बढ़ेंगे। जिसे मैं फिर से यही कहूँगा कि मृत्यु की दुर्गंध विकृत लोगों पर छा जाती है।

तो चलिए 8 से शुरू करते हैं। हम 14 तक पढ़ेंगे। मैं एक ऐसे अनुवाद से पढ़ूँगा जिसमें NIV है, जहाँ मैं कुछ बिंदुओं पर असहमत हूँ। इसलिए मैं इसे NIV के अनुसार ही पढ़ूँगा।

और फिर जैसे-जैसे हम एक-एक पद पर काम करेंगे, मैं आपको बताऊँगा कि मुझे लगता है कि पद 10 ठीक-ठीक क्या कह रहा है। प्रभु परमेश्वर ने अपनी ही शपथ ली है। याद रखिए, आप किसी ऐसी चीज़ की शपथ लेते हैं जो निश्चित हो।

और इसलिए जब प्रभु अपनी शपथ लेते हैं, तो वास्तव में, इब्रानी भाषा में, यह उनका जीवन है, उनकी आत्मा है, शायद उनका नेफेश भी। और इसलिए प्रभु अपनी, अपने जीवन की शपथ ले रहे हैं। अरे, प्रभु शाश्वत हैं।

वह हमेशा जीवित है। यह स्थिर है, स्थायी है। और इसलिए यह शपथ स्वयं उसकी ओर से ली जा रही है।

सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर कहता है, "मुझे याकूब के घमण्ड से घृणा है, और उसके गढ़ों से घृणा है। मैं उस नगर और उसमें जो कुछ है, उसे तुरन्त सौंप दूँगा।" तो फिर प्रभु किससे घृणा करता है? वह उनकी पाखंडी उपासना से घृणा करता है।

वह उनके घमंड से भी नफ़रत करता है, जो मुझे लगता है कि ज़्यादा बुनियादी है। यह उनके हर काम का आधार है। और यही वह विषय है जो हमें पुराने नियम के ज्ञान साहित्य में मिलता है।

नीतिवचन में, प्रभु घमंड से घृणा करते हैं। उन्हें घमंडी नज़र से नफ़रत है। और यही बात इन लोगों को प्रेरित करती है कि वे यह सारा धन, चाहे वे इसे किसी भी तरह से कमाएँ, पाना चाहते हैं, क्योंकि वे खुद को दूसरों से और यहाँ तक कि आस-पास के देशों से भी बेहतर और श्रेष्ठ समझना चाहते हैं।

और इसलिए वे घमंड से प्रेरित हैं, और प्रभु उनके घमंड से घृणा करता है। और वह उनके किलों से घृणा करता है क्योंकि यह उनके घमंड और खुद को ऊँचा उठाने और अपनी रक्षा करने की उनकी कोशिश का नतीजा है। इसलिए मैं उस शहर और उसमें मौजूद हर चीज़ को सौंप दूँगा।

यह बात पूरी तरह से व्यापक और सम्पूर्ण लगती है। अगर एक घर में दस लोग रह जाएँ, तो वे भी मर जाएँगे। और अगर जो रिश्तेदार आएँगे, अब हम मौत के बाद के माहौल में हैं, तो ऐसा लगता है जैसे वे सब मर जाएँगे, लेकिन भविष्यवक्ता अक्सर ऐसा ही करते हैं, लेकिन जो कुछ बच जाते हैं, उनके साथ ऐसा ही होगा।

और अगर कोई रिश्तेदार लाशों को जलाने के लिए घर से बाहर ले जाने आए, तो मैं उस पर दोबारा विचार करना चाहता हूँ। वहाँ छिपे किसी भी व्यक्ति से पूछो, क्या तुम्हारे साथ कोई और है? और वह कहता है, नहीं। फिर वह कहता है, "चुप रहो, हमें प्रभु का नाम नहीं लेना चाहिए। हम यह जोखिम भी नहीं उठाना चाहते कि वह हम पर और कोई न्यायदंड लाए।"

क्योंकि यहोवा ने आज्ञा दी है। उसने आदेश जारी किया है। उसने आज्ञा दी है, और वह उस बड़े भवन को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

एक आम बड़ा घर तो है, लेकिन छोटा घर टुकड़ों में बिखरा हुआ है। तो न्याय के बारे में यही एक दुखद बात है। आपको ऐसा लगता है कि प्रभु नेतृत्व को निशाना बना रहे हैं, लेकिन हकीकत यह है कि नेता जो करते हैं, उसका असर नीचे तक पहुँचता है और सभी का रवैया भ्रष्ट हो जाता है, और कभी-कभी, जब न्याय आता है, तो कुछ नुकसान भी होता है।

यहाँ तक कि निर्दोष लोगों पर भी न्याय का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हबक्कूक की पुस्तक के बारे में सोचिए। हबक्कूक की समस्या यह है, "हे प्रभु, आप बाबुलियों को बचाएँगे?" यहूदा में अन्याय की समस्या का समाधान कैसे है? यह समाधान कैसे है? मुझे समझ नहीं आ रहा।

वे हमसे भी बदतर हैं, और तुम्हारे लोगों का क्या? मेरा क्या? और प्रभु कहते हैं कि धर्मी और निर्दोष लोग अपनी वफादारी से, या जैसा कि पौलुस समझते हैं, विश्वास से जीवित रहेंगे। विश्वास और वफादारी एक साथ चलते हैं। धर्मी बचे हुए लोगों को बचाया जाएगा, और पुस्तक के अंत में, याद कीजिए हबक्कूक कहता है, "ठीक है, मुझे पता है कि मुसीबत आने वाली है, और हम शायद भुखमरी के कगार पर पहुँच जाएँगे।"

यह अच्छा नहीं होगा, और सभी प्रभावित होंगे, धर्मी लोग भी, लेकिन मुझे विश्वास है कि प्रभु अपने वफादार अनुयायियों का साथ देंगे, और हम उन पहाड़ी बकरियों की तरह होंगे जो उस पथरीले इलाके में चल सकती हैं, और आप उन्हें देखते हैं, और सोचते हैं, वे बिना गिरकर मरें ऐसा कैसे कर सकती हैं? लेकिन हबक्कूक कहता है, मैं जानता हूँ कि प्रभु हमें इससे निकलने में सक्षम बनाएगा, इसलिए गरीब लोग भी प्रभावित होंगे क्योंकि परमेश्वर का न्याय सामूहिक है, और यह प्रभाव डालता है, और इसके साथ ही नुकसान भी होता है, और छोटा सा घर भी टुकड़ों में बिखर जाता है, और फिर वह एक प्रश्न पूछता है, और अधिकांश अनुवाद यहाँ एक वैकल्पिक व्याख्या के साथ जा रहे हैं, जो मुझे लगता है कि सही है, और यह यहाँ परिलक्षित होता है। क्या घोड़े पथरीली चट्टानों पर दौड़ते हैं? क्या आपने कभी किसी को घोड़ों को दौड़ाने, घोड़े की सवारी करने, या पथरीली चट्टान पर, किसी चट्टान पर रथ चलाने की कोशिश करते देखा है? नहीं, यह पागलपन है। यह विचित्र है।

आप इसे कभी नहीं देखेंगे, और फिर, वास्तव में, पारंपरिक पाठ कहता है, क्या बैलों से हल चलाया जाता है? हाँ, हाँ, आप चलाते हैं, लेकिन यह मुश्किल है। आप उस हिब्रू शब्द "बैलों" को दो शब्दों में विभाजित कर सकते हैं, और फिर आपको यह मिलता है। क्या बैलों से समुद्र जोता जाता है? नहीं।

कोई भी पानी में हल लेकर, बैलों से जोड़कर, समुद्र को जोतने की कोशिश नहीं करता। यह अजीब है। यह पागलपन है।

इसका कोई मतलब नहीं है, और अब प्रभु हमें इस बारे में कुछ अंतर्दृष्टि देने जा रहे हैं कि वे अन्याय को किस नज़र से देखते हैं, लेकिन आपने न्याय को ज़हर में और धार्मिकता के फल को कड़वाहट में बदल दिया है, और हमने अपने पिछले व्याख्यानों में से एक में न्याय के बारे में बात की थी। जब आप न्याय को लागू होते देखते हैं, तो आपको याद होगा कि मैंने क्लासिक वेस्टर्न का उदाहरण दिया था, जहाँ विषय आमतौर पर न्याय की जीत होती है, और बुरे लोग इसे प्राप्त करते

हैं, इसलिए बुरे व्यक्ति मत बनो, क्योंकि कानून आपके पीछे आएगा, और आपको यह मिलेगा, और हाँ, न्याय एक ऐसी चीज़ है जिसके बारे में हमें अच्छा लगता है। यह हमें खुशी देता है, लेकिन वे जो कर रहे हैं, उन्होंने न्याय और धार्मिकता के फल को ज़हरीला और कड़वा बना दिया है, और यह एक विकृति है।

न्याय को कभी भी उलट-पुलट या विकृत नहीं किया जाना चाहिए, ताकि वह ज़हरीला और कड़वा न हो जाए। आप जो कर रहे हैं, वह घोड़े को चट्टान पर दौड़ाने या बैलों से समुद्र जोतने जैसा है। यह पागलपन है, और इस मामले में, यह नैतिक पागलपन है।

आप जानते हैं, बताई गई बाकी बातें पागलपन भरी हरकतें होंगी, जो आत्मघाती होंगी, लेकिन इस मामले में, नैतिक पागलपन जैसी चीज़ भी है। आप जानते हैं, जब लोग तय करते हैं कि हम बच्चों को मार देंगे, हम बच्चों को मार देंगे, क्योंकि इस समय आपके लिए बच्चे पैदा करना सुविधाजनक नहीं है। जब वे ऐसा करते हैं, तो ईश्वर की नज़र में, आप न्याय को, जो सही है, ज़हरीले और कड़वे में बदल रहे होते हैं, और विडंबना यह है कि वे उस कार्रवाई का बचाव, आप जानते हैं, किसी तरह के बेतुके तर्क और झूठे आधारों के ज़रिए करेंगे कि बच्चा बच्चा नहीं है।

तो फिर तुम इसे क्यों मार रहे हो? अगर यह बढ़ रहा है, तो यह जीवित है। अगर यह नहीं बढ़ रहा है, तो तुम्हें चिंता करने की कोई बात नहीं है, इसलिए इसका कोई मतलब नहीं है, और इसलिए प्रभु उन्हें इस पर बुला रहे हैं, और कहते हैं, "हे लो- दबार की विजय पर आनन्दित होने वालों।" हम इस पर ध्यान नहीं देते क्योंकि हम मूल हिब्रू भाषी नहीं हैं।

हममें से जिन्होंने हिब्रू पढ़ी है, वे इसे समझ लेते हैं। जानते हो लो - दबार का मतलब क्या होता है? कुछ नहीं। ज़ाहिर है, यही उस जगह का नाम था।

मुझे नहीं पता कि आपने किसी जगह का नाम ऐसा क्यों रखा, लेकिन कुछ भी नहीं, और इसलिए आप इस धोखे में खुश हो रहे हैं... आपने लो- दबार नाम की जगह पर विजय प्राप्त की। आपने वास्तव में कुछ भी नहीं जीता। आपकी सफलताएँ निरर्थक हैं।

यह मूर्खों का सोना है। यह... आपकी सैन्य शक्ति, जो आपको लगता है कि आपके पास है, आपको आने वाली चुनौतियों से नहीं बचा पाएगी, और आप कहते हैं, क्या हमने अपनी ताकत से कर्नायिम पर कब्ज़ा नहीं किया, और हम कर्नायिम को देखते हैं, तो लगता है, यह कोई जगह होगी। हाँ, यह एक जगह है, और वास्तव में इसका दोहरा रूप है।

जब वे किसी चीज़ के दो होने का संकेत देना चाहते हैं तो हिब्रू में इसका दोहरा रूप होता है, और वे केरेन, सींग, जैसे किसी जानवर का सींग, शब्द लेते हैं और वे दो सींग कहते हैं, तो जाहिर तौर पर वहां कर्नायिम नामक एक जगह थी। उन्होंने इसे दो सींगों वाला नाम दिया क्योंकि वे इसे बहुत ताकत का स्थान मानते थे, और इसलिए आपने लारनायिम पर विजय प्राप्त की। आपने दो सींगों पर विजय प्राप्त की, और हम फिर से एक जंगली बैल के सींग की बात कर रहे हैं जिसका इस्तेमाल बैल अपनी रक्षा के लिए और किसी प्रकार की लड़ाई में दूसरे बैल को हराने के लिए करता है, और इसलिए पुराने नियम में सींग को अक्सर ताकत का प्रतीक माना जाता है।

भजनकार कहता है कि प्रभु मेरा उद्धारक सींग है। वही मेरी शक्ति और मेरी शक्ति है जो मेरे शत्रुओं को परास्त करती है, ठीक वैसे ही जैसे बैल अपने शत्रुओं को सींग मारकर मार डालता है, और तुम सोचते हो कि तुम इतने शक्तिशाली हो क्योंकि तुमने लो-दबार और कर्णयिम ले लिए। सच कहूँ तो तुमने कुछ नहीं किया, और हाँ, तुमने दो सींग ले लिए, लेकिन इससे कुछ नहीं होगा क्योंकि जब प्रभु तुम्हारा न्याय करेगा तो तुम उसका सामना नहीं कर पाओगे।

चौथा, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर घोषणा करते हैं, और एक बार फिर, यह सेनाओं का प्रभु परमेश्वर है। जब एनआईवी सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का अनुवाद करता है, तो यह सेनाओं का प्रभु परमेश्वर होता है। सर्वशक्तिमान ठीक है।

सेनाओं का परमेश्वर यहोवा शक्तिशाली है, और वे इसे सामने लाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन मुझे कुछ हालिया अनुवाद पसंद हैं जिनमें सेनाओं का परमेश्वर यहोवा लिखा होगा, यानी जो सैन्य संदर्भ में सेनाओं का नेतृत्व करता है, और वह घोषणा करता है, यही वह असली योद्धा है जो सभी दुश्मनों को हरा सकता है। मैं तुम्हारे विरुद्ध एक राष्ट्र को उकसाऊँगा, इसलिए यहोवा एक राष्ट्र खड़ा करेगा। वैसे, वह राष्ट्र अश्वरू होगा।

कुछ ही वर्षों में, अश्वरू यह निर्णय लेने जा रहे हैं कि हमें अपने साम्राज्य का विस्तार भूमध्य सागर से पश्चिम की ओर पुनः करना होगा, ठीक वैसे ही जैसे शल्मनेसर ने पिछली शताब्दी में किया था, और हम अब ऐसा करने जा रहे हैं, और प्रभु ही हैं जो उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं क्योंकि वह उन्हें इस्राएल और यहूदा के विरुद्ध न्याय के साधन के रूप में उपयोग करने जा रहे हैं। अब, यहूदा को 8वीं शताब्दी में, 701 में, बख्श दिया गया, प्रभु ने यरूशलेम को बख्श दिया, लेकिन अंततः यरूशलेम नष्ट होने वाला है, इसलिए प्रभु ने कहा, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक राष्ट्र को, इस्राएल को, भड़काऊँगा, जो तुम्हें हर तरह से प्रताड़ित करेगा, इसलिए यह राष्ट्र उन पर हमला के स्तर से, हमला के प्रवेश द्वार से, उत्तर में अराम के पास अरावा की घाटी तक, दक्षिण में नीचे तक अत्याचार करेगा, इसलिए यह एक ऐसा न्याय होगा जो पूरे राष्ट्र से होकर गुजरेगा, और यही हुआ, न केवल इस्राएल, बल्कि यहूदा भी, और शायद इसीलिए शुरुआत में सिथ्योन को संबोधित किया गया, क्योंकि जो न्याय आने वाला है, यहूदा उस न्याय में शामिल है, और जैसे ही परमेश्वर उत्तरी राज्य का न्याय करता है, यहूदा पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ने वाला है, तो अब हम अध्याय 6 के अंत पर आ गए हैं, और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, मैं कुछ सिद्धांतों को समझाने का प्रयास कर रहा हूँ, और इस विशेष अंश के लिए यह काफी छोटा और सरल है।

परमेश्वर अहंकार से घृणा करता है और अभिमानीयों का सक्रिय रूप से विरोध करता है। यही सिद्धांत है, और यह सिद्धांत पूरे पवित्रशास्त्र में व्याप्त है। प्रभु अहंकार से घृणा करता है, और वह अभिमानीयों का सक्रिय रूप से विरोध करता है।

अक्सर जब ईश्वर घृणा करता है, तो यह सिर्फ एक भावनात्मक बात नहीं होती, बल्कि वह रूपक के ज़रिए विरोध करता है। वह घृणा करता है, और फिर उसी के अनुसार कार्य करता है। ठीक वैसे ही जैसे ईश्वर के अनुसार प्रेम भी सिर्फ एक भावना नहीं है।

प्रभु हमसे अपेक्षा करते हैं कि हम उनसे प्रेम करें। इसका मतलब यह नहीं कि हम अपने रिश्ते को लेकर सिर्फ अच्छा महसूस करें। नहीं, हमें उनके अनुसार कार्य करना चाहिए और उनकी आज्ञा माननी चाहिए।

अगर हम सचमुच उससे प्यार करते हैं, तो हम उसकी आज्ञा मानेंगे। और वह हमसे प्यार करता है, और यह सिर्फ एक भावना नहीं है जो वह महसूस करता है। नहीं, वह उस प्यार को ठोस, सकारात्मक तरीकों से दर्शाता है।

इसलिए परमेश्वर अहंकार से घृणा करता है। इस अध्याय में विस्तार से बताया गया है कि कैसे यह अहंकार उनके संदर्भ में प्रकट हुआ, और वह सक्रिय रूप से उनका विरोध करेगा और उद्धार के इतिहास को उलट देगा। अगर वे उसकी खोज नहीं करते और उसकी ओर नहीं मुड़ते, और न्याय सुनिश्चित करके अपने काम करने के तरीके में सचमुच क्रांतिकारी बदलाव नहीं लाते, तो वह उन्हें पूरी तरह से बदल देगा।

हम यहीं रुकेंगे और अपने अगले व्याख्यान में अध्याय 7 से इसे आगे बढ़ाएँगे।

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म द्वारा आमोस की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। आमोस: सिंह दहाड़ चुका है, कौन नहीं डरेगा? यह सत्र संख्या 5 है, आमोस 5:18-27, "आज्ञाकारिता, बलिदान नहीं", आमोस 6:1-7, "पार्टी समाप्त हो गई है", और आमोस 6:8-14, "मृत्यु की दुर्गंध लोगों पर छा गई है"।